भजन

तर्ज– अब सौंप दिया इस जीवन का

श्री प्राणनाथ पूर्णब्रह्म ने,सब धर्मो का झगड़ा मिटाया है
है सोई खुदा सोई पूर्णब्रह्म, ये अनोखा ज्ञान सुनाया है

1– ये दुनिया आदि अनादि से थी, आवागमन के चक्कर में
ब्रह्म ज्ञान की अखंड वाणी से,त्रैगुण का फंद छुड़ाया है

2– सब कहते हैं इक पूर्ण ब्रह्म,पर है वो कौन मिटा न भरम
अपनी पहचान बता करके,निजघर का रस्ता बताया है

3– श्री विजयाभिनंदन प्राणनाथ, नर तन में पधारे हैं साक्षात
धन्य कलियुग और धन्य भरतखंड,जहाँ आपने फेरा लगाया है

4– हम सुन्दरसाथ हैं अंग उनके,भूले हैं माया का संग करके
हम परमधाम से आये हैं,हम सबको ये समझाया है